P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-8* April- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हिन्दी कथा साहित्य में बाल विमर्श

Child Discourse in Hindi Fiction

Paper Submission: 02/04/2021, Date of Acceptance: 20/04/2021, Date of Publication: 23/04/2021

वर्षा रानी
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी
राजकीय महाविद्यालय,
भदोही, उत्तर प्रदेश, भारत

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में बाल कहानियां एक अलग विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो रही हैं। यद्यपि यह कथा साहित्य का ही एक अंग है, तथापि स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि विमर्श के साहित्य के समान ही बाल साहित्य को भी बाल विमर्श के अंतर्गत देखा जा रहा है। बाल साहित्य छोटी उम्र के बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा गया साहित्य होता है। बाल साहित्य लेखन की परंपरा अति प्राचीन है । बाल साहित्य की सर्वप्रथम विधा कहानी ही है। नानी दादी के किस्सों में वर्णित कहानियों पर आधारित कथा साहित्य ही बाल कथा साहित्य का मूल स्वरूप है। प्राचीन काल से ही बाल कहानियों का मुख्य उद्देश्य रोचक घटनाओं के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करना रहा है। बाल कथा में उपदेश की नीरसता को दूर करने के लिए ही काल्पनिक पात्रों और पशु पक्षियों को आधार बनाया गया। चित्र–कथाओं के माध्यम से बच्चों के लिए प्रेरणास्पद कहानियों को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। आज के समय में बाल विमर्श के अंतर्गत उन कथा साहित्य को भी अध्ययन का विषय बनाया गया है जो बालकों के लिए ना लिखी जा कर बालकों के मनोविज्ञान को समझने का प्रयास करती हैं। जैसे – सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी के आपका बण्टी नामक उपन्यास में बण्टी नामक बाल पात्र की मनोदशा का चित्रण किया गया है, यहां कथा के केन्द्र में बण्टी नामक बालक है, जो माता पिता की महत्वाकांक्षा और आधुनिक जीवन परिस्थितियों में उपेक्षित बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास की कथावस्तु के संदर्भ में मन्नू भण्डारी का वक्तव्य है – 'मुझे लगा कि बंटी किन्हीं एक दो घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा है– अलग–अलग संदर्भों में, अलग–अलग स्थितियों में। लेकिन एक बात मुझे इन बच्चों में समान लगी और वह यह कि यह सभी फालतू, गैरजरूरी और अपनी जड़ों से कटे हुए हैं।'[1] यह उपन्यास बाल विमर्श से जुड़ा है, किन्तु इसे बाल साहित्य के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता, क्योंकि यह बालकों के लिये नहीं लिखा गया है। अतः यह विचारणीय है कि बाल विमर्श के अंतर्गत किस प्रकार के कथा साहित्यों को रखा जाना चाहिये? क्या केवल वही साहित्य बाल विमर्श का विषय हैं जो बच्चों के लिये – (उनके शिक्षण, मनोरंजन अथवा उपदेश के उद्देश्य से) लिखा गया है या लिखा जा रहा है? अथवा जिन साहित्यों के केन्द्र में बच्चे हैं या बाल मनोविज्ञान का अंकन है, या जिसका विषय बच्चों से संबंधित है? इन तथ्यों के विश्लेषण के लिये बाल विमर्श के स्वरूप को जानना होगा। बाल विमर्श के स्वरूप को जानने के लिए प्राचीन काल से लेकर अब तक के हिन्दी कथा साहित्य में बाल विमर्श के स्वरूप का अध्ययन और विश्लेषण किया जाना अभीष्ट है।

In contemporary Hindi fiction, child stories are becoming a distinct genre. Although it is a part of fiction, however, child literature is also being seen under child discourse. Children's literature is literature written keeping in mind the children of young age. The tradition of writing children's literature is very ancient. The first genre of children's literature is the story. Since ancient times, the main purpose of child stories has been to educate children through interesting events. In order to overcome the monotony of preaching in Bal Katha, only fictional characters and animal, birds were formed. Attempts were made to entertain inspiring stories for children through picture stories. In today's time, under the discussion of children, fiction has also been made the subject of study, which attempts to understand the psychology of children rather than being written for children. The famous writer Mannu Bhandari's novel named Aapka Banti depicts the mood of a child character named Banti, at the center of the story here is a child named Banti, who represents parents' ambitions and children neglected under modern living conditions. This novel is related to children's discourse, but it cannot be placed under children's literature, because it is for children.. Is only literature that is written or is being written for children - (for the purpose of their teaching, entertainment or preaching) for children? Or the literature in which children are at the center, or the marking of child psychology, or whose subject is related to children? For the analysis of these facts, the nature of child discourse has to be known. To know the nature of child discourse, it is desired to study and analyze the nature of child discourse in Hindi fiction literature from ancient times till now.

मुख्य शब्दः पूर्व प्रेमचंद युगीन कथा साहित्य में बाल विमर्श, प्रेमचंद युगीन कथा साहित्य में बाल विमर्श, प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में बाल विमर्श, समकालीन कथा साहित्य में बाल विमर्श, बाल साहित्य के विविध स्वरूप।

Child discourse in era of Pre-Premchanda's fiction, child discourse in the era of Premchanda's fiction, child discourse in contemporary literature, Miscellaneous forms of children's literature.

प्रस्तावना

बाल विमर्श से तात्पर्य बच्चों के लिए लिखित साहित्य के चिंतन, दशा और संभावनाओं पर आधारित विमर्श है। सामान्यतः साहित्य के क्षेत्र में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि विमर्शों से तात्पर्य वर्ग विशेष द्वारा उसी वर्ग विशेष से संबंधित चिंतन से है। जैसे स्त्री विमर्श का अर्थ है– स्त्री साहित्यकार द्वारा स्त्री जीवन से संबंधित विमर्श। दलित विमर्श अर्थात दलित वर्ग के साहित्यकारों द्वारा दलित वर्ग के जीवन से संबंधित चिंतन आदि। इस संदर्भ में दलित साहित्य के प्रमुख साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथन विचारणीय है – 'दलित द्वारा दलित के जीवन पर लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है।' इसके अतिरिक्त स्वानुभूति पर आधारित साहित्य को ही उस वर्ग विशेष का साहित्य माना जाने लगा है। वस्तुतः समकालीन हिंदी साहित्य में विमर्शों के साहित्य की एक नवीन परंपरा का चलन देखा जा रहा है। इसी तर्ज पर साहित्य में बच्चों पर किए जाने वाले विचार विमर्श को बाल विमर्श के अंतर्गत रखा जा रहा है। साथ ही इस तथ्य पर भी जोर दिया जा रहा है कि किस प्रकार की रचनाओं को बाल साहित्य की श्रेणी में रखा जाए। बाल विमर्श के अंतर्गत बाल साहित्य को कई श्रेणियों में बांटकर विमर्श का विषय बनाया गया है। जैसे – 1. प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा लिखा गया बाल साहित्य, 2. स्वयं बालकों द्वारा लिखा गया साहित्य, जिसमें बच्चे ही केंद्र में हो तथा 3. अन्य विषयों को केंद्र में रखकर बच्चों द्वारा लिखित रचनाएं। कई विचारकों का मानना है कि बच्चों द्वारा स्वानुभूति के आधार पर लिखित रचनाएं हीं बाल विमर्श के अंतर्गत आती हैं। प्रमुख आलोचक रमेश दिविक के अनुसार 'बाल कविता और बालक के द्वारा लिखी गई कविता में अंतर होता है। बाल कविता बाल मन के निकट की, बालक के लिए रचना होती है, जबकि बालक के द्वारा रचित रचना बड़ों के लिए भी हो सकती है, और प्रायः होती है।'

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधपत्र में बालविमर्श के संदर्भों को विभिन्न विद्वानों के साहित्य, साक्षात्कार और शोधपत्र तथा कथा साहित्य से पुष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित साहित्य का अनुसंधानपरक एवं विश्लेषणात्मक अवलोकन किया गया।

दिविक रमेश ने दिनांक 18 नवम्बर 2018 को साहित्य आज तक चैनल पर दिये गये साक्षात्कार द्वारा बाल साहित्य के महत्व को रेखांकित किया है।

श्री कौशलेन्द्र प्रपन्न ने गद्यकोश की वेबसाइट पर बाल साहित्य : बच्चों में पढ़ने की दक्षता नामक शोध आलेख में बाल साहित्य व बाल विमर्श के स्वरूप और विकास पर प्रकाश डालते हुए बाल साहित्य की हिन्दी साहित्य के साथ साथ अन्य भाषाओं में बाल साहित्य की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है।

भारत दर्शन ई पत्रिका में बाल साहित्य की परिभाषा और स्वरूप विश्लेषण के साथ दिये गये विभिन्न बाल साहित्य के अवलोकन से इस शोध पत्र में बाल साहित्य का स्वरूप विश्लेषण किया गया। जिसके अनुसार 'बाल साहित्य के अंतर्गत वह शिक्षाप्रद साहित्य आता है जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया हो। बाल साहित्य में रोचक, शिक्षाप्रद बाल कहानियां, बालगीत व कविताएं प्रमुख हैं।'

पिट्सबर्ग अमेरिका से प्रकाशित द्वैभाषिक मासिक पत्रिका सेतु में प्रकाशित प्रदीप त्रिपाठी व कविता शर्मा के साथ दिविक रमेश के साक्षात्कार में बच्चों के जीवन पर केन्द्रित साहित्य को विमर्श के रूप में तरजीह न मिलने तथा बाल विमर्श की हिन्दी साहित्य में आरम्भ से लेकर वर्तमान स्थिति तक के विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं, दशा और दिशा पर वैचारिक विश्लेषण किया गया है।

हिन्दी समय की वेबसाइट पर प्रकाशित दिविक रमेश की 'प्रेमचंद की बाल कहानियाँ : कुछ निजी नोट्स' शीर्षक में प्रेमचंदयुगीन बाल साहित्य की स्थिति तथा प्रवृत्तिगत विशेषताओं का विवेचन किया गया है।

एनसीईआरटी की कक्षा 9 की हिन्दी की पुस्तक 'क्षितिज' में संकलित 'दो बैलों की आत्मकथा' तथा कक्षा 5 की पुस्तक 'मेधा' में संकलित मिट्ठू शीर्षक मुंशी प्रेमचंद की कहानियां वर्तमान पाठ्य पुस्तकों में बालकों हेतु चयनित बालकथा में प्रेमचंदयुगीन बाल कथा साहित्य की सार्थकता को प्रदर्शित करता है तथा इस तरह की कहानियों के लेखन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को भी दर्शाता है।

सुप्रसिद्ध कथा लेखिका मन्नू भण्डारी का उपन्यास आपका बंटी बाल मनोविज्ञान के विमर्श को प्रस्तुत करता है।

मुंशी प्रेमचंद के गबन नामक उपन्यास में बाल मनोविज्ञान का सुन्दर विश्लेषण मिलता है। यह उपन्यास किसी वर्ग विशेष के पाठक या समाज विशेष के संदर्भों से अलग एक कालजयी रचना है जो बालकों और बड़ों दोनों को समान रूप से शिक्षित भी करता है।

प्रो. सुधाकर सिंह एवं डॉ. वर्षा रानी द्वारा संपादित 'कथा कहानी' नामक पुस्तक की भूमिका में बालविमर्श की समीचीन समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख में हिंदी कथा साहित्य के विभिन्न युगों में लिखित साहित्य की विशेषताओं के आलोक में बाल विमर्श का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इसका उद्देश्य मुख्य रूप से अब तक के कथा साहित्य में बाल विमर्श की स्थिति और स्वरूप का अध्ययन कर इस तथ्य का विश्लेषण करना है कि बाल

विमर्श के अंतर्गत किस प्रकार के कथा साहित्य का अध्ययन किया जाना चाहिए।

विषय विस्तार

पूर्व प्रेमचंद युगीन कथा साहित्य में बाल विमर्श

संस्कृत साहित्य में बालोपयोगी और किशोरोपयोगी रचनाएँ थीं – जिनमें कथासरित्सागर, पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाएँ, ईसप की कहानियाँ, सिंहासन बत्तीसी, बेताल पचीसी (अनूदित) आदि थीं। उन्नीसवीं सदी तक यूरोप का प्रभामंडल भी व्याप गया था। राबिन्सन क्रूसो, डेविड कॉपरफील्ड, सिंदबाद आदि पुस्तकों की किशोरोपयोगी कहानियों से भारतीय बच्चे परिचित हो चुके थे। हमारे यहाँ भी इसका असर पड़ रहा था और इस तरह के साहित्य का सृजन होने लगा था। संस्कृत और अंग्रेजी पुस्तकों के जोर–शोर से अनुवाद हुए। हिंदी खड़ी बोली तब अपने विकास की ओर अग्रसर ही थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र सत्य हरिश्चंद्र और अंधेर नगरी चौपट राजा जैसे नाटकों की रचना कर रहे थे, जो शिक्षाप्रद तो थीं ही, सामाजिक चेतना को उजागर करनेवाली रचनाएँ भी थीं। हिंदी में बाल कहानियों का लेखन भारतेंदु युग से ही प्रारंभ हो चुका था। राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद को बाल कहानी के सूत्रपात का श्रेय दिया जाता है । उनकी कहानी राजा भोज का सपना, बच्चों का इनाम, लड़कों की कहानी आदि रचनाएं इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। इससे पूर्व 1623 ईश्वर में जटमल द्वारा लिखित गोरा बादल की कथा को प्रथम बाल पुस्तक माना गया। किंतु यह रचनाएं बच्चों को ध्यान में रखकर नहीं लिखी गई थीं। सन 1862 में 'बाल दर्पण' नाम से बच्चों की पहली पत्रिका प्रकाशित हुई। इस पत्रिका के माध्यम से देश प्रेम और अच्छे संस्कारों के उद्देश्य से उपनिषदों और धर्म ग्रंथों की कहानियों का प्रकाशन भी किया गया।

द्विवेदी युग में अनेक धार्मिक ग्रंथों के बाल संस्करण जैसे– बाल भागवत, बाल रामायण, बाल महाभारत आदि प्रकाशित हुए। सन् 1917 में महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इंडियन प्रेस इलाहाबाद द्वारा 'बाल सखा' पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिसके प्रथम संपादक पंडित बद्रीनाथ भट्ट थे। द्विवेदी युगीन अन्य बाल पत्रिकाओं में विद्यार्थी एवं शिशु का नाम उल्लेखनीय है । इन पत्रिकाओं में शेख चिल्ली, ठगों और परियों की कहानी, शिक्षाप्रद, पौराणिक और धार्मिक कथाओं को प्रमुख रूप से बाल कहानी का विषय बनाया गया। द्विवेदी युग के बाल साहित्य रचने वालों में बालमुकुंद गुप्त, पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय, पंडित कामता प्रसाद गुरु, मैथिलीशरण गुप्त, रामजी लाल शर्मा, मन्नन द्विवेदी, पंडित सुदर्शन आचार्य, शालिग्राम शर्मा, डॉ रामकुमार वर्मा, रघुनंदन प्रसाद त्रिपाठी, शंभू दयाल सक्सेना, ठाकुर श्रीनाथ सेन आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

दिवेदी युग के बाद लिखे जाने वाले बाल साहित्य में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुख रहा। इस युग की कहानियों में वैज्ञानिकता, रोचकता, वीरता और मनोरंजकता आदि का समावेश था। प्रमुख कहानीकारों में भगवती प्रसाद वाजपेई, प्रेमचंद, जहूर बख्श, पंडित रामदहिन मिश्र तथा राय बहादुर लज्जा शंकर झा का नाम उल्लेखनीय है।

प्रेमचंदयुगीन कथा साहित्य में बाल विमर्श

प्रेमचंद युग को कथा साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। बाल कहानियां भी यथार्थ अभिव्यक्ति के साथ सर्वप्रथम प्रेमचंद युग में ही प्रकाशित हुईं। जैसे– दो बैलों की कथा, ईदगाह आदि। प्रसिद्ध आलोचक परमानंद श्रीवास्तव का मत है कि 'प्रेमचंद बड़ी संवेदना के लेखक हैं, उनके यहाँ सबके लिए साहित्य मिल जाता है – बच्चों के लिए साहित्य मिल जाएगा, किशोरों के लिए भी मिल जाएगा। 'गुल्ली डंडा' किशोर भी मजा लेकर पढ़ेगा, बड़े लोग भी पढ़ सकते हैं।' प्रेमचंद के कथा साहित्य की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि उनमें बालकों और किशोरों के मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। जैसे– गबन नामक उपन्यास यद्यपि बालकों के लिये लिखित उपन्यास नहीं है, तथापि मुख्य पात्र जालपा के बाल मन का अत्यंत यथार्थ चित्रण करते हुए प्रेमचंद जी ने आरंभ में ही लिखा है– 'एक बड़ी बड़ी आंखों वाली बालिका ने वह चीज पसंद की जो उन चमकती हुई चीजों में सबसे सुन्दर थी। वह फिरोजी रंग का एक चंद्रहार था। मां से बोली ''अम्मा मैं यह हार लूंगी''। माता ने कहा ''यह तो बड़ा महंगा है। चार दिन में इसकी चमक–दमक जाती रहेगी।'' बिसाती ने मार्मिक भाव से सिर हिलाकर कहा ''बहू जी 4 दिन में तो बिटिया को असली चंद्रहार मिल जाएगा।'' माता के हृदय पर इन सहृदयता से भरे हुए शब्दों ने चोट की। हार ले लिया गया। बालिका के आनंद की सीमा न थी। शायद हीरों के हार से भी उसे इतना आनंद ना होता। उसे पहनकर वह सारे गांव में नाचती थी। उसके पास जो बाल संपत्ति थी उसमें सबसे मूल्यवान सबसे प्रिय यही बिल्लौर का हार था।'[2]

प्रेमचंद जी की कहानियों में उपस्थित बाल पात्रों के चरित्र में बालकों के लिए उपदेश या शिक्षा से अधिक बाल मनोविज्ञान का चित्रण मिलता है। जैसे– बड़े भाई साहब, ईदगाह, मिट्ठू, बूढ़ी काकी आदि कहानियों में उपस्थित बच्चों के चरित्र चित्रण में बाल मन की सहृदयता, कोमलता और सच्चाई का यथार्थ अंकन है। मिट्ठू नामक कहानी का बाल पात्र गोपाल मिट्ठू नामक बंदर से बहुत प्रेम करता था। इस कथा में जानवरों से बच्चों की प्रेम और मित्रता की भावना का सुन्दर चित्रण मिलता है। – 'लखनऊ शहर में एक सर्कस कंपनी आई थी। उसके पास शेर, भालू, चीता और कई तरह के और जानवर भी थे। इनके साथ ही एक बंदर मिट्ठू भी था। बच्चों के झुंड के झुंड रोज इन जानवरों को देखने आया करते थे। मिट्ठू ही उन्हें सबसे प्यारा लगता। उन्हीं बच्चों में गोपाल भी था। वह रोज आता और मिट्ठू के पास घंटों चुपचाप बैठा रहता। वह मिट्ठू के लिए घर से चने, मटर, केले लाता और उसे खिलाता। मिट्ठू भी गोपाल से इतना हिल मिल गया था कि बिना उसके खिलाए कुछ ना खाता। इस प्रकार दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई।'[3]

इसी प्रकार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की कक्षा 9 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक में संकलित दो बैलों की कथा में अत्यंत रोचक भाषा में बैलों का परिचय दृष्टव्य है– 'लेकिन गधे का एक

छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है। और वह है बैल। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं।'[4]

प्रेमचंद की अनेक कहानियों में जानवरों की उपस्थिति बाल मन को आकर्षित करती है। जैसे– दो बैलों की कथा, मिट्ठू, पूस की रात, आदि। इसीलिए बच्चों के पाठ्यक्रम में प्रेमचंद की कहानियां विशेष महत्व रखती हैं। उनका कथा संसार वस्तुतः मानव समाज के यथार्थ से जुड़ा है। अतः बच्चों से लेकर बड़ों तक हर वर्ग के लिए उपयुक्त कहानियां और उपन्यास उनके कथा साहित्य में मिल जाता है। मंत्र, पंच परमेश्वर, गुल्ली डंडा, क्रिकेट मैच, सैलानी बंदर, नमक का दरोगा जैसी कहानियां रोचक, मनोरंजक, ह्रदयस्पर्शी, मार्मिक और प्रेरणास्पद होने के कारण बच्चों के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित हैं। भाषा की सरलता, रोचकता और प्रेरणात्मक होने के कारण ही इन्हें बाल साहित्य के अंतर्गत रखा गया है। इस युग के अन्य कहानीकारों में पंत, महादेवी वर्मा (उदाहरण–गिल्लू), सुभद्रा कुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी आदि का नाम उल्लेखनीय है।

प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में बाल विमर्श

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाल साहित्य की समृद्धि हुई। सभी सरकारी गैर सरकारी संस्थाओं ने अनेक बाल पुस्तकें प्रकाशित कीं। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से बाल भारती नामक बच्चों की संपूर्ण पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। पराग, नंदन आदि इस युग की अन्य प्रमुख पत्रिकाएं हैं। इसी समय इंडियन प्रेस प्रयाग से कथासरित्सागर का बालोपयोगी संस्करण तथा ईसप की कहानियां छपीं। तेनालीराम और बीरबल के मनोरंजक किस्से भी छापे गए। जादू की डिबिया, जादू की चिड़िया शीर्षक मजेदार कहानियां प्रकाशित हुईं। बाल उपन्यास की विधा का आरंभ भी इसी युग में हुआ। लोक कथाओं के प्रति भी अभिरुचि बड़ी। सन् 1960 से 1980 के बीच हिंदी बाल साहित्य का चतुर्दिक विकास हुआ। वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति बढ़ी। सचित्र पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। परी कथाएं भी नए रूप में रची गईं, जैसे शारदा मिश्र की नील परी और मसहरी की देवी, हरिकृष्ण देवसरे की नए परीलोक में तथा शिवमूर्ति सिंह वत्स की सुनहरी मछली आदि। इस कालखंड में विष्णु प्रभाकर, यादवेंद्र चंद्र शर्मा, श्री प्रसाद, डॉ. राष्ट्रबंधु, रामधारी सिंह दिनकर, चंद्रपाल सिंह यादव 'मयंक', रामबचन सिंह आनंद, विनोद चंद्र पांडेय, मनहर चौहान, जयप्रकाश भारती, योगेंद्र कुमार लल्ला, रत्न प्रकाश शील, हरेकृष्ण देवसरे, श्री चक्रधर नलिन, दिविक रमेश, देवेंद्र कुमार, शांति मेहरोत्रा, विभा देवसरे, स्नेहा अग्रवाल, शकुंतला वर्मा, क्षमा शर्मा, सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, उषा यादव आदि रचनाकारों ने श्रेष्ठ बाल कहानियों की रचना की है।

समकालीन कथा साहित्य में बाल विमर्श

समकालीन कथा साहित्य में बाल कहानियों को एक विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया जा रहा है। इसके अनुसार बाल साहित्य छोटी उम्र के बच्चों को ध्यान में रख कर लिखा गया साहित्य होता है। बाल कथा साहित्य का उद्देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन कर उन्हें जीवन की वास्तविकता से परिचित कराना है। अतः बाल साहित्य के लेखक को बाल मनोविज्ञान की पूरी जानकारी होना आवश्यक है तभी वह बाल मानस के अनुसार साहित्य रच सकेगा।

समकालीन बाल साहित्य के उत्थान में श्री के शंकर पिल्लई का नाम उल्लेखनीय है। श्री के शंकर पिल्लई द्वारा बाल साहित्य के संदर्भ में चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट की स्थापना सन् 1957 में की गई थी इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य बच्चों के लिए बेहतर बाल साहित्य उपलब्ध कराना है। बाल कथा साहित्य की अभिवृद्धि में भी इस ट्रस्ट का उल्लेखनीय योगदान है। जैसे– हिंदी में पौराणिक कथाएं– यथा– कृष्ण सुदामा, प्रह्लाद आदि। पशु पक्षियों, पर्यावरण और वन्य जीवन पर आधारित कहानियां – जैसे पंचतंत्र की कहानियां, जंगल की कहानियां आदि। विज्ञान की ज्ञानवर्धक कहानियां जैसे – उपयोगी अविष्कार, कंप्यूटर, घड़ी, टेलीफोन, रेलगाड़ी, पर्वत की पुकार, आदि। मनोरंजक, खेल, जासूसी, रहस्य, और रोमांच की कहानियां– जैसे –अनोखा उपहार, ननिहाल में गुजरे पांच दिन, जासूसों का जासूस, पांच जासूस आदि। महान व्यक्तित्व से संबंधित कहानियां जैसे– जगदीश चंद्र बसु, सुभाष चंद्र बोस आदि ।

वर्तमान समय में हिंदी बाल साहित्य में अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं से अनूदित बाल साहित्य का योगदान भी उल्लेखनीय है। नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कोरियाई बाल कविता नामक पुस्तक दिविक रमेश द्वारा अनूदित की गई है। इसी क्रम में सन् 1991 में शंकर आर्ट अकादमी की स्थापना की गई जहां पर पुस्तक चित्र आर्ट तथा ग्राफिक के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। पत्रिकाओं के स्तर पर अनेक भारतीय भाषाओं में चंपक, बालहंस, बालभारती, नन्हे सम्राट, नंदन आदि का प्रकाशन किया जा रहा है समाचार पत्रों में भी बालकों का कोना प्रकाशित किया जाता है। टाइम्स ऑफ इंडिया के दरियागंज स्थित एम आई सेंटर में दिल्ली के स्कूली बच्चों की रचनाओं पर आधारित शिक्षा का पृष्ठ संपादित होता है।

आधुनिक बाल कथा साहित्य का प्रवर्तक श्री जयप्रकाश भारती को माना गया है। जयप्रकाश भारती जी का मानना है कि 'जिस देश के पास समृद्ध बाल साहित्य नहीं है, वह उज्ज्वल भविष्य की आशा कैसे कर सकता है? और क्या बालक को कल या परसों के भरोसे छोड़ा जा सकता है ? 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए हमारे बालक तैयार हैं कि नहीं'। बाल विमर्श से संबंधित तथ्यों और इसके स्वरूप की महत्वपूर्ण जानकारियां श्री जयप्रकाश भारती की 'बाल साहित्य 21वीं सदी में' , प्रकाश मनु की 'हिंदी बाल कविता का इतिहास' एवं दिविक रमेश के साक्षात्कार और हिन्दी कहानी का समकालीन परिवेश, 'प्रेमचंद की बाल कहानियाँ : कुछ निजी नोट्स' में भी संदर्भित हैं।

वर्तमान बाल साहित्य की विषयवस्तु के संदर्भ में डॉ. कामना सिंह ने अपनी पुस्तक 'स्वातंत्रयोत्तर हिंदी बाल साहित्य' में लिखा है – 'स्वतंत्रता के बाद उपजी आधुनिकता की लहर ने आज के बच्चे की मानसिकता के साथ ही उसके समूचे साहित्यिक परिदृश्य में भी नव्यता

का बीजारोपण किया है। जन समूह संचार माध्यमों में आई क्रांति के फलस्वरूप कंप्यूटर इंटरनेट आदि आज के बच्चे के लिए जादुई दुनिया नहीं दैनिक प्रयोग की चीजें बन चुकी हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में वह साहित्य में भी कुछ नया चाहता है। कुछ ऐसा जो उसे ना तो उपदेश की तरह ऊपर से थोपा प्रतीत हो और ना ऐसा जो उसे एक अजनबी दुनिया में ले जाए। वह अपना शैक्षिक परिवेश, अपना संसार, अपनी आकांक्षाएँ और अपनी अस्मिता साहित्य में पाना चाहता है। कुल मिलाकर आज के बालक की रुचि आधुनिकता बोध में है।'

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि समकालीन बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान, विज्ञान की प्रगति, समकालीन बदलती जीवन मूल्य और संचार माध्यमों में आई क्रांति आदि ही प्रमुख विषय वस्तु हैं। किंतु पूर्व के कथा साहित्य में अभिव्यक्त लोक कथाएं, परी कथाएं, पौराणिक कथाएं, ऐतिहासिक कथाएं, दादी नानी के किस्से, रहस्य लोक की कथाएं, जासूसी कहानियां, उपदेशात्मक और प्रेरणास्पद किंतु अत्यंत रोचक और मनोरंजन से युक्त कल्पना प्रधान से लेकर यथार्थ तक की अभिव्यक्ति करने वाले कथा साहित्य का आज भी उतना ही महत्व है। इनके माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता रागात्मकता और संवेदनशीलता के मानवीय गुणों का संचार होता है। यांत्रिकता के वर्तमान दौर में इन मानवीय गुणों का महत्व और भी बढ़ जाता है। नीरस उपदेशों और ज्ञान के बोझ से भरी हुई कहानियां कभी भी बाल साहित्य का अंग नहीं बन सकतीं। अतः हिन्दी कथा साहित्य में बाल विमर्श के संदर्भों के अध्ययन के लिए बालकों के शिक्षण या मनोरंजन के उद्देश्य से लिखी गयी कहानियों के साथ–साथ ऐसी कहानियों को भी देखना होगा जो भले ही बाल पाठकों के लिये सोद्देश्य न लिखी गयी हों, किन्तु उनकी विषय वस्तु बच्चों के मानसिक विकास के लिये उपयुक्त, मनोरंजक, प्रेरणादायी और शिक्षाप्रद हों। दूसरी ओर बाल विमर्श के अंतर्गत हम उन कृतियों का भी अध्ययन करते हैं जो बालकों के पढ़ने के लिए उपयुक्त या उनके योग्य नहीं है किन्तु उनमें बच्चों के मानसिक और सामाजिक उत्थान–पतन की समस्याओं पर विचार किया गया हो। जैसे– मन्नू भण्डारी का उपन्यास आपका बण्टी, प्रेमचंद जी के उपन्यास गबन और निर्मला, मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'बोझ' आदि। इन कथा साहित्यों में बच्चों की परवरिश और उनके प्रति माता पिता और समाज के दायित्वों पर विमर्श किया गया है। इन कृतियों में चित्रित बच्चे उपेक्षा का शिकार हैं। आपका बण्टी का केन्द्रीय बालपात्र बण्टी माता पिता के तलाक के कारण उपेक्षित है तो बोझ कहानी का बालक कामकाजी माता पिता की अर्थोपार्जन की व्यस्तता के कारण उपेक्षित है। निर्मला उपन्यास में तोताराम के तीनों पुत्र अकुशल परवरिश के कारण छिन्न भिन्न हो जाते हैं और गबन की बालिका जालपा अनुचित संस्कार के कारण विवाह का अर्थ केवल गहने, कपड़े, और धन सम्पन्न जीवन ही समझ पाती है।

इस प्रकार हिन्दी कथा साहित्य में बाल विमर्श के अनेक आयाम हैं जो समय और समाज के परिप्रेक्ष्य में बाल मन को समझने और उनकी परवरिश, विकास, आकांक्षाओं और अधिकारों के प्रति हमें सचेत करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भंडारी मन्नू आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली,पृष्ठ 4, संस्करण– 2000।*
2. *मुंशी प्रेमचंद, गबन, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, पृष्ठ 3।*
3. *मुंशी,प्रेमचंद, मिट्ठू, कृति प्रकाशन प्रा. लि., लखनऊ, मेधा 5 में संकलित।*
4. *मुंशी प्रेमचंद, दो बैलों की आत्मकथा, एनसीईआरटी, क्षितिज, भाग–1, कक्षा 09 के लिए हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में संकलित, पृष्ठ–03।*
5. *दिविक रमेश, साक्षात्कार, 'साहित्य आज तक' चैनल (https://youtu-be/PvbS&1W&NOM) दिनांक 18/11/2018A*
6. *प्रपन्न, कौशलेन्द्र, बाल साहित्य : बच्चों में पढ़ने की दक्षता, gadyakosh.org*
7. *भारत दर्शन, हिन्दी ई पत्रिका, ISSN-2423-0758, https//www.bharatdarshan.co.nz/magazineamp/38/baal-sahitya.html*
8. *सक्षात्कार, दिविक रमेश से प्रदीप त्रिपाठी एवं कविता शर्मा की वार्ता, सेतु, पिट्सबर्ग अमेरिका से प्रकाशित द्वैभाषिक मासिक पत्रिका, ISSN 2475-1359, http://www.setumag.com/2019/12/Interview-Divik-Ramesh.html*
9. *https://www.hindisamay.com/content/10506/1 प्रेमचंद की बाल कहानियाँ : कुछ निजी नोट्स, दिविक रमेश ।*
10. *मुंशी प्रेमचंद, दो बैलों की आत्मकथा, NCERT, क्षितिज–भाग–1, कक्षा 09 के हिन्दी के पाठ्यक्रम में संकलित कहानियां।*
11. *भंडारी, मन्नू, आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 4, संस्करण– 2000।*
12. *मुंशी प्रेमचंद, गबन, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, पृष्ठ 3।*
13. *मुंशी,प्रेमचंद, मिट्ठू, कृति प्रकाशन प्रा. लि., लखनऊ, मेधा 5, में संकलित कहानियां।*
14. *सिंह, सुधाकर एवं रानी, वर्षा, कथा कहानी, जयभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्क. 2016, ISBN & 978–93–84919–05–04।*